NH-22

वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति

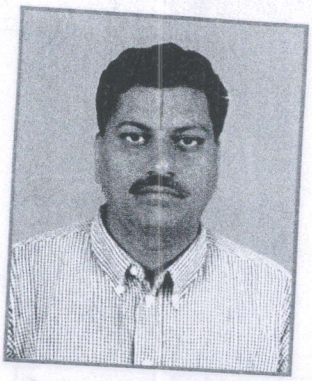

डॉ. पी.आर. वासुदेवन 'शेष'
जी–4, अक्षया फ्लेट्स,
53, इरूस्पा स्ट्रीट, आइस हाउस,
ट्रिपलिकेन, चेन्नै–600005

'संस्कृति' शब्द अपने में सभी सामाजिक संस्कारों, परम्पराओं, सभ्यता के विभिन्न तत्वों तथा लौकिक, आध्यात्मिक और धार्मिक मान्यताओं को समेटे हुए है। भारतीय संस्कृति का मूलाधार वेद और स्मृतियां हैं, जिनके आधार पर हिंदू समाज की विभिन्न जातियां चल रही हैं।

संस्कृति और परम्पराओं में गहरा सम्बन्ध होता है। अनेक परम्पराएं सभी जातियों और धर्मों में ऐसी हैं, जिनका धर्म से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। ऐसी परम्पराओं का पालन सभी समान रूप से करते हैं। भारतीय परम्परा में पुनः और विवाह का उत्सव, बड़े उत्साह से बाजे–गाजे के साथ मनाया जाता है। भारतीय हिंदू, मुसलमान आदि सभी समान रूप से इन दोनों संस्कारों में परम्पराओं का निर्वाह करते हैं पर उनके धार्मिक नियम भिन्न हैं। घर परिवार में बड़े–बूढ़ों का मान करना, उनके प्रति श्रद्धा रखना भारतीय परम्परा है, इसका यथासम्भव निर्वाह सभी भारतीय करते हैं।

भारतीय संस्कृति, जिसका देश–विदेश में गुणगान होता रहता है, वह है भारतीय दर्शन, ज्योतिष तथा साहित्य शास्त्र की सूक्ष्मता और विश्लेषणात्मक तथ्य–निरूपण। इसमें आस्तिक अध्यात्मवाद का मिश्रण ही इसे सार्वभौम सम्मान प्रदान कराने में समर्थ हुआ, यही एक ऐसी विशेषता इस संस्कृति में है जिनके रहस्य को जानकर सभी मुग्ध हो जाते हैं। भारतीय संस्कृति में जीवन के लौकिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों की अलग–अलग मीमांसा की गई है तथा लौकिक पक्ष को आध्यात्मिक उन्नति के साधन के रूप में सहायक कहा गया है। गीता का सामान्य उपदेश है कि कर्म करो, फल में आसक्ति न रखो, वही कर्मयोग या निष्काम कर्म है। इसमें कितना ऊँचा दर्शन है कि कर्मफल का जितना अंश प्राप्त होगा वह लौकिक दृष्टि से महत्वपूर्ण होगा, जो नहीं प्राप्त होगा उसके लिए कष्ट होगा क्योंकि उसमें आशक्ति नहीं है। भारतीय संस्कृति जीवन नाटक को कभी दुखांत बनाने के पक्ष में नहीं रही है, यही कारण है कि भारतीय काव्य–परम्परा में दुखांत रचनाओं का सर्वथा अभाव है।

अटूट रूप में संबद्ध है। यह सेतु विश्वव्यापी हिंदी साहित्यिक समाज का निर्माण करता है। विभिन्न देशों के हिंदी लेखक एवं हिंदी समाज भारत के हिंदी समाज से जुड़ते हैं और परस्पर एक दूसरे के निकट आकर हिंदी विश्व को स्थायित्व प्रदान करते हैं। भारतेत्तर देशों में भारतवंशियों के इस हिंदी साहित्य ने अपना एक भरा पूरा संसार निर्मित किया है। इस प्रवासी हिंदी साहित्य ने प्रदेश में रहते हुए स्वदेश को देखने का दृष्टिकोण बदला है और वहाँ की परिस्थितियों, जीवन संघर्ष आदि को देखने, समझने, जीने के दृष्टिकोण में क्रांतिकारी रूप से उद्वेलन एवं परिवर्तन उत्पन्न किया है।"

विदेशों में बसे अनेक प्रवासी साहित्यिकारों को विशिष्ट पहचान मिलने लगी है। हाल ही में कुछ विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में देशातर में हिंदी की व्याप्ति के साथ हिंदी डास्पोरा को शामिल किया गया है। मॉरीशस से अभिमन्यु अनंत (कथा साहित्य), अमरीका से सुषमा बेदी (कथा साहित्य), सेधा ओम ढींगरा (कहानी), सुदर्शन प्रियदर्शिनी (उपन्यास, कहानी और कविता), अनिल प्रभा कुमार (कहानी और कविता), ब्रिटेन से मोहन राणा (कविता), जकिया जुबैरी (कहानी), तेजेन्द्र शर्मा (कहानी), दिव्या माथुर (कहानी), डेनमार्क से अर्चना पैन्यूली (उपन्यास), शारजाह से पूर्णिमा बर्मन (कविता), सिंगापुर से श्रद्धा जैन (गजल) जैसे कई लेखक अध्ययन अध्यापन के अंग बने हैं, वहीं प्रवासी साहित्य पर अनुसंधान की नई राह खुल गई है।

विगत दशकों में अनेक लेखकगण दुनिया के तमाम देशों में सृजनरत रहे हैं। इनमें उल्लेखनीय हैं – सोमदत्त बखोरी, मुनीश्वर चिंतामणि, प्रो. वासुदेव विष्णुदयाल, पूजानंद नेमा, रामदेव धुरंदर, राज हीरामन, राजरानी गोबिन (मॉरीशस), पं. कमला प्रसाद मिश्र, जोगिंदर सिंह कँवल, विवेकानंद शर्मा (फिजी), सुरेशचंद्र शुक्ल शरद आलोक (नार्वे), कविता वाचक्कनवी (यू.के.), स्नेह ठाकुर (कनाडा), अनीता कपूर, अंजना संधीर (अमरीका) आदि। वस्तुतः देश दुनिया के कई विश्वविद्यालयों की पाठ्यचर्या और शोध की दृष्टि से हिंदी में जारी प्रवासी लेखन को लेकर पैदा हुए नए रुझान और सक्रियता को शुभ संकेत माना जा सकता है, जो भारतीय संस्कृति और हिंदी विश्व को नूतन परिप्रेक्ष्य दे रहा है।

विदेशों में भारतीय संस्कृति, धर्म, भारतीय साहित्य, दर्शन, जीवन और मूल्यों के प्रति अनुराग के साथ हिंदी साहित्य के शिक्षण के लिए बहुत बड़ी तादाद में लोग आतुर और प्रवृत्त हैं। विदेशों में हिंदी साहित्य चाहे वो फिर मुंशी प्रेमचंद के बहुचर्चित गबन, गोदान, कायाकल्प, रंगभूमि एवं गुरूदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर की गीतांजलि का हिंदी अनुवाद किया गया है। महाभारत, गीता एवं रामचरित मानस को अनुवाद कर वे पढ़ रहे हैं। इससे वे भारतीय संस्कृति और साहित्य को नजदीकी से जान पा रहे हैं।

आज के दौर में सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक प्रसार के साथ आज यह कोई समस्या

नहीं है। हिंदी भाषा से विदेशों में शिक्षार्थी भारत की जड़ों और संस्कृति को सहज ही आत्मसात कर सकेंगे चाहे वे भारतवंशी हो या फिर विदेशी मूल के।

हिंदी और भारतीय संस्कृति मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, गुयाना जैसे देशों में कठिन संघर्षों के बीच पली बड़ी है, उनका संघर्ष काल अब बीत चुका है। इन देशों में भारतवंशी बड़ी संख्या में हैं। वहीं राजनैतिक दृष्टि से प्रभावी भी है। नए दौर की चुनौतियाँ जैसी भारत में हैं, वैसी वहाँ भी हैं, जैसे आत्महीनता, कथित गुलाम मानसिकता, आधुनिक सभ्यता के दबाव, पराई भाषा और संस्कृति के प्रति अविचारित आसक्ति आदि।

विश्व में भारतीय भाषाओं के प्रचार और प्रसार में विदेशी और प्रवासी विद्वानों और साहित्यकारों के योगदान को भारतीय साहित्यकारों और हिंदी प्रेमियों से कम नहीं आँका जा सकता है। हिंदी साहित्य को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पल्लवित और पुष्पित करने का श्रेय प्रवासी भारतीयों को जाता है। "वसुधैव कुटुंबकम" जो हमारी संस्कृति का मूल भाव है वह विदेशियों को बहुत आकर्षित करता है। जब विदेशी अपने देश में भी भारतीयों की आत्मीयता को देखते हैं तो इस भाव से वह भी अनुप्रेरित होते हैं। हिंदी साहित्य का अपना वैशिष्ट्य है, जो उसकी संवेदना, जीवन दृष्टि सरोकार तथा परिवेश में परिलक्षित होता है।

प्रवासी साहित्य ने हिंदी में मनोवैज्ञानिक और आजीविका से उत्पन्न द्वंद्व का एक अलग अनुभव दिया है, जैसे एक ही समय से दूर होने

का दर्द और घर से दूर होने की जरूरत हमें प्रवासी साहित्य की अनेक कहानियों में स्पष्ट दिखाई देती है। प्रवासी लेखक के सामने रंगभेद की समस्या, अतीत के प्रति मोह, सांस्कृतिक संकट, पीढ़ीगत अंतर, बेगानापन, नारी की दशा के अलावा और भी संवेदनाएं आती हैं। प्रवासी साहित्यकार हों या देसी अपने अनुभव और भावनाओं को साहित्य के माध्यम से अपने घर पहुँचाता है। वह अपने लोगों के लिए एक खुली खिड़की का कार्य करता है। जैसे तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'पासपोर्ट का रंग', प्रियवंदा की 'वापसी', सौमित्र सक्सेना की 'लडैती', सुषमा बेदी की कहानी 'लौटना', अरूणा सब्बरवाल की 'मरीचिका', दिव्या माथुर की 'साजिश', अलका भटनागर की 'इंतजार', निर्मल वर्मा की नस्लवाद से जूझती कहानी 'लंदन की एक रात', संधा ओम ढींगरा की 'कौन सी जमीन अपनी', आदि कहानियों के माध्यम से वहाँ की दशा और उससे जूझते लोगों की पीड़ा को हम भली भांति समझ सकते हैं।

हिंदी साहित्य में भूमंडलीय बाजारवाद, उपभोगतावादी संस्कृति एवं सांस्कृतिक मूल्यहीनता का चरम यथार्थ देखने को मिल रहा है। सामाजिक संबंधों में धन का ही महत्वपूर्ण स्थान है। तेजेन्द्र शर्मा अपनी कहानी 'अभिशप्त' में भी इसी तथ्य को उजागर करते हैं।

भारत की सभ्यता, संस्कृति, धर्म और दर्शन के रूप में भारतीय सांस्कृतिक गरिमा ने सदैव विश्व को आकर्षित किया है। मॉरीशस में हिंदी कविता का निरंतर विकास हुआ है। जैसे ठाकुर प्रसाद मिश्र के 'हिंदू नेता' और 'मधुमास', कालीचरण का 'प्रथम रश्मि', सुमति बुधन का 'दस्तक', ठाकुर दत्त पांडेय के 'निशा', 'पुष्पांजलि', 'आलोक' एवं 'प्रणाम' आदि। इसके अलावा अभिमन्यु अनंत ने बीस वर्ष तक 'बसंत', 'त्रैमासिक' पत्रिका का संपादन किया है। इन सभी कविताओं में भारतीय संस्कृति की झलक देखने को मिलती है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि हिंदी साहित्य में मूलतः एक भारतीय संस्कृति, परम्परा, धर्म अपनी अस्मिता को लेकर शुरू हुआ। सन् 1960 के बाद अर्थोपार्जन हेतु विदेश गए भारतीय के द्वारा गिरमिटिया देशों के साहित्य में इतिहास के शोषण जीवन संघर्ष की मूक अभिव्यक्ति एवं अस्तित्व संकट से जुड़ी संवेदनाएँ हैं। वहीं दूसरी ओर 1960 के बाद अमेरिका, इंग्लैंड, कनाडा जैसे विकसित देशों के प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य जीवन अनुभवों, वहाँ की संस्कृति नए सरोकार तथा बाजारवाद की गंध से सराबोर है।

इन सभी प्रवासी भारतीयों के साहित्य में सांस्कृतिक संवेदनाओं को बखूबी अपने साहित्य में समय–समय पर उकेरा गया है जिससे यह प्रतीत होता है कि प्रवासी भारतीयों के साहित्य के प्रति कितनी श्रद्धा है और वे इससे कदापि अछूते नहीं रह सकते।